प्रथम अध्याय :

"कुसुम कुमार : व्यक्तित्व एवं कृतित्व "

प्रथम अध्याय - ' कुसुम कुमार : व्यक्तित्व एवं कृतित्व '

प्रस्तावना :

किसी भी साहित्यकार के कृतित्व को उसके व्यक्तिगत जीवन एवं अनुभवों से पृथक करके नहीं देखा जा सकता। किसी लेखक का परिचय लिखना आसान नहीं है। साहित्यकार के विचार, भावनाएँ उसके जीवन की प्रतिछाया उनके साहित्य में प्रतिबिंबित होती है। रचनाकार अपने जीवन की अनुभूतियों को, जीवन में घटित घटनाओं को अपने साहित्य के माध्यम से समाज के सामने प्रस्तुत करता है। साहित्यकार जिस परिवेश में जन्म लेता है, उसी परिवेश का प्रभाव उसके व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर होता है। उनका जीवन उनकी कलाकृतियों में अभिव्यक्त होता है। रचनाकार अपने जीवन में घटित अनुभवों, सुख-दुःखों, या कटु-मधुर स्मृतियों को सुंदर कल्पनाओं में डालकर अपने साहित्य में प्रस्तुत करता है।

रचनाकार के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का परिचय प्राप्त करने से पूर्व उनके साहित्य का गहन अध्ययन करना पड़ता है। साहित्यकार की कलाकृतियाँ उनके चिंतन-मनन जीवन के खट्टे-मीठे अनुभवों का निचोड़ होता है। साहित्यिक रचनाएँ, साहित्यकारों की सर्जनात्मक क्रियाओं और प्रवृत्तियों की सूचक होती है। व्यक्तित्व एवं कृतित्व के संबंध में डॉ.सरोज मार्कण्डेय का कथन दृष्टव्य है " किसी व्यक्ति की विशेषता, भिन्नता, विचित्रता उसके व्यक्तित्व में स्पष्ट होती है, अतएव व्यक्तित्व व्यक्ति के परिचय का प्रतीक है। व्यक्तित्व मात्र शारीरिक विशेषताओं मानसिक, सांस्कृतिक, पूँजीभूत रूप है। "[1] उपरोक्त कथन से स्पष्ट होता है कि व्यक्ति का व्यक्तित्व उसके शारीरिक, मानसिक, सांस्कृतिक विशेषताओं में निहित होता है। अतः यह कहना सही होगा कि लेखक के स्वभावगत गुणों का प्रभाव उसकी रचनाओं में परिलक्षित होता है।

शोधछात्र की सीमित जानकारी के अनुसार कुसुम कुमार के व्यक्तित्व एवं जीवन तथा उनके नाट्य साहित्य पर आलोचनात्मक विवेचन प्रस्तुत करनेवाले ग्रथों का अभाव है, फिर भी कुसुम कुमार के साहित्य में चित्रित उनके व्यक्तित्व एवं जीवन के कुछ पहलू, कुसुम कुमार से पत्राचार द्वारा प्राप्त जानकारी, तथा उनके साथ दूरभाष पर हुई चर्चा के आधार पर प्रस्तुत अध्याय लिखने का प्रयास किया है| कुसुम कुमार के नाट्य साहित्य का अनुशीलन करने से पूर्व उनके जीवन परिचय को प्रस्तुत करना उचित होगा। कुसुम कुमार के व्यक्तित्व के पहलुओं को तलाशने के लिए तीन घटकों का आधार लेना समीचीन होगा -

1. जीवन परिचय

2. व्यक्तित्व

3. कृतित्व

1.1 जीवन परिचय

1.1.1 जन्म तिथि -

बहुचर्चित नाटककार कुसुम कुमार का जन्म दि. 5 अगस्त, 1939 ई में हुआ है।

1.1.2 जन्म स्थान -

कुसुम कुमार उन भाग्यशाली लेखकों में से एक है, जिनका जन्मस्थल भारत की राजधानी दिल्ली है। उनका जन्म पुरानी दिल्ली में हुआ।

1.1.3 बाल्यकाल -

कुसुम कुमार का बाल्यकाल सुखमय था। इनका परिवार सयुंक्त परिवार था। वह पाँच भाईयों की अकेली बहन हैं, इसी कारण इनके परिवार में उनका काफी लाड़-प्यार हुआ। " इनका बचपन का नाम 'तोषी ' है। "[2] परिवार के लोग इन्हें ' तोषी ' इस नाम से पुकारते थे।

1.1.4 माता-पिता -

अपने माता-पिता के बारे में कुसुम कुमार ने पत्र में लिखा है - " धर्मपरायण, कर्मठ, घोर परिश्रमी, हम बच्चों को भी सदा नीतिपरक पाठ पढ़ानेवाले। काफी हद तक शिक्षित भी। सुंदर व्यक्तित्ववाले, मर्यादाशील।"[3] माता-पिता के संस्कार कुसुम कुमार को विरासत से मिले है।

1.1.5 विवाह -

कुसुम कुमार का विवाह उनकी बीस वर्ष की आयु में दि. 10 अगस्त, 1959 ई. को 'श्री.स्वदेश कुमार ' के साथ हुआ। उनका वैवाहिक जीवन सफल एवं सुखद रहा है।

1.1.6 पति -

पति स्वदेश का साहित्य सृजन में सहयोग प्रेरणा और मार्गदर्शन हमेशा प्राप्त हुआ, इसलिए कुसुम कुमार इतना विशाल साहित्य सृजन कर सकी। पति के बारे में कुसुम कुमार ने पत्र में लिखा हैं " अत्यन्त प्रेमल पति।" [4] कुसुम कुमार के पति स्वदेश कुमार दिल्ली में एक फूड़ कंपनी में ' जनरल मैनेजर ' थे। अब वे सेवानिवृत्त हुए हैं।

1.1.7 परिवार -

कुसुम कुमार का परिवार ' हम दो हमारे दो ' इस कथन से साम्य रखनेवाला परिवार हैं। कुसुम कुमार की दो संतानें हैं। एक पुत्र चार्टंड अकाउन्टैड हैं और एक पुत्री अमरीका निवासी है। दोनों संतानें विवाहित हैं। पारिवारिक जीवन के बारे में कुसुम कुमार ने पत्र में लिखा हैं - " पति व पिता दोनों ही तरफ मध्यमवर्गीयता। किन्तु सुखी व प्रसन्नपूर्ण जीवन। पांच भाईयों की एक अकेली बहन मैं जो आज एक साहित्यकार के रूप में जानी जाती है।"[5] कुसुम कुमार का पारिवारिक जीवन आम आदमी जैसा मध्यमवर्गीय परिवार में बीता है। कुसुम कुमार संयुक्त परिवार की पक्षधर हैं। कुसुम कुमार पारिवारिक जीवन में पुत्री, पत्नी, बहू, माँ तथा सास आदि रूपों में दिखाई देती हैं। इतनी सारी भूमिकाएँ निभाते-निभाते कुसुम कुमार अपनी 67 वर्ष की आयु में भी साहित्य - सृजन

में व्यस्त हैं। कुसुम कुमार अपने परिवार के सदस्यों को सहृदय से चाहनेवाली हैं। उनके साहित्य में चित्रित माँ का रूप उनके जीवन से ही प्रभावित हैं।

1.1.8 शिक्षा -

कुसुम कुमार का जन्म दिल्ली में होने के कारण प्रायमरी तथा हाईस्कूल की शिक्षा दिल्ली स्थित ' सरस्वती विद्यालय, दरियागंज' में हुई हैं। कुसुम कुमार का विवाह महाविद्यालयीन शिक्षा लेते समय हुआ। उन्होंने महाविद्यालयीन शिक्षा पंजाब विश्वविद्यालय, चंदीगढ़ में पूर्ण की।

1.1.9 पीएच्.डी -

कुसुम कुमार ने अपने जीवन में शिक्षा को महत्त्व दिया है। जिस राष्ट्रभाषा हिंदी में उन्होंने अपना साहित्य- सृजन किया है, उसी राष्ट्रभाषा में उन्होंने पीएच्.डी. की उपाधि प्राप्त की है| उन्होंने डॉ.गणपतिचंद्र गुप्त के निर्देशन में "हिंदी नाट्य चिंतन का विकासात्मक अध्ययन" विषय पर पीएच्.डी. की उपाधि प्राप्त की।

1.1.10 नौकरी -

कुसुम कुमार ने दिल्ली विश्वविद्यालय में दो वर्ष तक अध्यापन किया और बाद में उन्होंने नौकरी छोड़ दी। नौकरी की भागदौड़ की जिदंगी में भावुक, संवेदनशील, सहृदयी, साहित्यप्रेमी कुसुम कुमार का मन नौकरी में नहीं लगा। उन्होंने अपनी नौकरी छोड़ दी और साहित्य-सृजन के प्रिय क्षेत्र में कार्य करना पसंद किया।

1.1.11 चित्रकार -

सुविख्यात साहित्यकार कुसुम कुमार उन साहित्यकारों में से एक है, जिन्होंने साहित्य के साथ-साथ चित्रकला के क्षेत्र में भी अपना अलग रंग दिखाया है। उनके द्वारा लिखित उपन्यास ' पूर्वी द्वार ' के प्लेप पर यह विदित है कि - " साहित्य में अपने विश्वसनीय और सुथरी उपस्थिति के साथ-साथ एक कुशल तथा विचार-सवंलित चित्रकार के रूप में जानी गई। चित्रों की अब तक कुछ प्रदर्शनियाँ हो चुकी हैं। "[6] कुसुम कुमार ने व्यथितों, पीड़ितों की सच्ची तस्वीर, रंग और आकृति के माध्यम से अपने विचारों को साकार किया है। उनके दु:ख, दर्द, रंगों के अन्वेषण द्वारा चित्र सजीव, साकार बने हैं। कुसुम कुमार जन्मजात कलाकार है। चित्रकला के बारे में कुसुम कुमार का निम्न विचार दृष्टव्य हैं - " रंग केवल शरीर हैं चित्रों का; आत्मा समंजन और समन्वय में है। अच्छा समन्वय जो प्रभाव पैदा करता है, जो प्रभा उसी का नाम है ' चित्र '।"[7] कुसुम कुमार द्वारा लिखित उपन्यास ' पूर्वी द्वार ' के मुखपृष्ठ का चित्र स्वयं लेखिका ने बनाया है। इससे स्पष्ट होता है कि कुसुम कुमार का चित्रकार के रूप में एक अनोखा व्यक्तित्व हमारे सामने उभरता है, जो अन्य साहित्यकारों में दुर्लभ है।

1.1.12 प्रेरणा -

साहित्यकार के जीवन में प्रेरणा एक महत्वपूर्ण बात होती है, कुसुम कुमार इसके लिए अपवाद नहीं है। हिंदी के दिग्गज साहित्यकार कुसुम कुमार के जीवन में प्रेरणा स्त्रोत बने हैं। साहित्य के क्षेत्र में आपके आदर्श के रूप में जैनेन्द्रकुमार, अज्ञेय और चित्रा मुद्‌गल रहे हैं। साहित्य यात्रा के सहयोगियों के बारे में कुसुम कुमार ने पत्र में लिखा है - " जीवन के खट्टे-मीठें अनुभव, निजीजनों की शुभकामनाएँ , प्रेरणाएँ .....।"[8] कुसुम कुमार के जीवन में महत्वपूर्ण रही है।

1.2 व्यक्तित्व -

व्यक्तित्व की परिभाषा विभिन्न प्रकार से दी गयी है। ' नालन्दा विशाल शब्दसागर ' में लिखा हैं -

" 1) व्यक्ति का गुण या भाव।

2) वे विशेष गुण जिनके द्‌वारा किसी व्यक्ति की स्पष्ट और स्वतंत्र सत्ता सूचित होती हैं।"[9]

व्यक्तित्व को विश्लेषित करने के लिए उसे दो भागों में विभाजित किया जाता हैं - 1) अंतरंग व्यक्तित्व और 2) बहिरंग व्यक्तित्व । अंतरंग व्यक्तित्व में उस व्यक्ति का स्वभाव, उसके गुण, पसंदीदा चीजें आदि का विश्लेषण होता है और बहिरंग व्यक्तित्व में उस व्यक्ति का बाह्य व्यक्तित्व, रहन-सहन, आदतें, आदि को विश्लेषित किया जाता है।

1.2.1 बहिरंग व्यक्तित्व -

1.2.1.1 बाह्यरूप -

कुसुम कुमार जैसे महान लेखिका के व्यक्तित्व के विभिन्न पहलुओं की जानकारी प्राप्त करना गौरव की बात हैं। उनके व्यक्तित्व के पहलू इस प्रकार से है - कुसुम कुमार का सदृढ़ शरीर, गोरा रंग, लंब गोलाकार चेहरा, बंधे संवरे हुए बाल और बडी-सी बिंदी से युक्त उनका रूप देखने के बाद पता चलता है कि वे भारतीय संस्कृति में पली-पोषी नारी हैं। साड़ी, सलवार, कमीज, दुपट्टा सादगीयुक्त वेशभूषा में कुसुम कुमार का व्यक्तित्व गरिमामय दिखाई देता है।

1.2.1.2 मित्र - प्रेमी -

कुसुम कुमार का मित्र परिवार काफी समृद्‌ध हैं। उनके मित्र परिवार में समवयस्क तथा छोटे-बड़े आयु के मित्रों की भरमार हैं। मैत्री निभाते समय कुसुम कुमार अपने मित्रों के साथ कम - अधिक आयु की दीवार मित्रता में खड़ी नही करती। वह बच्चों के साथ बच्चों जैसा, बड़ों के साथ बड़ों जैसा व्यवहार करती हैं। स्नेहमयता, सहृदयता के कारण ही उनका मित्र परिवार विशाल रहा हैं।

दिल्ली निवास के दौरान कुसुम कुमार का संपर्क मराठी भाषी ललित देसाई से हुआ,

जिनसे प्रेरणा लेकर कुसुम कुमार ने मराठी का गहन अध्ययन किया है। इनके घर पर मित्रों का ताँता लगा रहता हैं। मराठी रंगभूमि के श्रेष्ठ नाटककार वसन्त कानेटकर, विजय तेंडुलकर, जयवंत दळवी कुसुम कुमार के अच्छे मित्र हैं। कुसुम कुमार का व्यक्तित्व ही उनके मित्र-परिवार के विस्तार का प्रमुख कारण है।

1.2.2 अंतरंग व्यक्तित्व -

1.2.2.1 बहुभाषज्ञता -

कुसुम कुमार का व्यक्तित्व बहुभाषज्ञ है। कुसुम कुमार हिंदी, मराठी, अंग्रेजी, पंजाबी आदि भाषाओं की ज्ञाता हैं। कुसुम कुमार का मातृभाषा के रूप में हिंदी पर काफी प्रभाव हैं और कर्मभूमि दिल्ली की खड़ीबोली पर जबरदस्त अधिकार रहा है। कुसुम कुमार ने दिल्ली के ललित देसाई नामक मित्र से मराठी सीखी है। अपनी जिज्ञासा और बुद्धिचातुर्य के आधार पर उन्होंने मराठी रंगभूमि के अनेक श्रेष्ठ नाटकों का अनुवाद हिंदी में किया है। मराठी के प्रसिद्ध नाटककार जयवंत दळवी, विजय तेंडुलकर और वसन्त कानेटकर के नाटकों का अनुवाद करके लेखिका कुसुम कुमार ने अपनी बहुभाषज्ञता होने का परिचय दिया है। अतएव कुसुम कुमार बहुभाषज्ञ लेखिका हैं।

1.2.2.2 साहसी -

कुसुम कुमार साहसी लेखिका है। उन्होने समाज में स्थित समस्याओं संबंधी अपने विचार बे - बाकी के साथ प्रस्तुत किये हैं। जिसमें निर्भिकता एवं यथार्थता दिखाई देती है। कुसुम कुमार ने अपने साहित्य में महानगरीय लोगों का रहन-सहन, राजनेताओं तथा अधिकारियों के पाखंडी और स्वार्थनीति का पर्दाफाश किया है।

कुसुम कुमार में साहस तथा उच्चनीतिमत्ता के दर्शन होते है। इसलिए उन्होंने व्यंग्य के माध्यम से समाज में स्थित दुर्गुणों पर कुटाराघात किया है। उनके नाटकों में साहसी नारी का चित्रण प्रमुखता से मिलता है। अतः कहा जा सकता है कि कुसुम कुमार का साहसी गुण उनके साहित्य में दिखाई देता है।

1.2.2.3 कुशाग्र बुद्धिमत्ता -

कुसुम कुमार के व्यक्तित्व में कुशाग्र बुद्धिमत्ता के दर्शन होते हैं। इसके साथ इनके व्यक्तित्व में जिज्ञासु, दृढनिश्चयी, कार्यतत्परता आदि गुण विद्यमान हैं। अपनी जिज्ञासुवृत्ति तथा कुशाग्रबुद्धि के कारण हिंदी नाट्य साहित्य में उन्होंने अपना अलग स्थान बना लिया है। मराठी नाट्य-साहित्य के गहन अध्ययन के लिए उन्होंने मराठी भाषा सीखी है। अपने बुद्धि चातुर्य के आधार पर मराठी के श्रेष्ठ नाटकों का अनुवाद भी किया है। कुसुम कुमार ने अपनी कुशाग्र बुद्धिमत्ता और जिज्ञासुवृत्ति के कारण हिंदी नाटक साहित्य में अलग स्थान अर्जित किया है।

1.2.2.4 ममता-मूर्ति मां -

आप दो बच्चों की मां हैं। आपकी बेटी अमरीका में जा बसी है। आपको हमेशा उनकी याद आती है। इसकी सही प्रतीति आपके उपन्यास 'पूर्वी द्वार' में होती है। मां की मानसिकता का सूक्ष्म अंकन आपने 'पूर्वी द्वार' उपन्यास में ममता-मूर्ति मां शारदा के माध्यम से किया है। "रूककर सोचा जाए तनिक कि आशा में प्राण हैं या फिर प्राणों में आशा ? जहां दोनों एक हैं उस मूर्ति का नाम 'मां' है। उस खूबसूरती का भी। शारदा वही मूर्ति, वही खूबसूरती है और शत-प्रतिशत मां। विदेश में जा बैठे निलांबर और तन्मय के पत्रों, संदेशों को, बार-बार पढ़ती, 'अच्छे अर्थ' ढूंढती - फोन पर हुई बातों तक से।"[10] ममता-मूर्ति मां का रूप सार्वकालिक सार्वजनीन है। विदेश में जा बैठे बच्चों द्वारा प्राप्त पत्र, संदेश मां के लिए सबकुछ होता है। मां अपने बच्चों को, अपने पास ही है, ऐसा अनुभव करती है। इसमें वह खुशी पाती है। कुसुम कुमार के साहित्य में चित्रित मां का रूप उनके जीवन से प्रभावित है। अतएव आपके मां के रूप का प्रतिबिंब आपके साहित्य में दिखाई देता है।

1.2.2.5 वैदिक धर्म के प्रति अगाध प्रेम -

कुसुम कुमार वैदिक धर्म के प्रति आकृष्ट है। कुसुम कुमार के व्यक्तित्व में वैदिक धर्म के प्रति अगाध प्रेम दिखाई देता है। वैदिक धर्म में 'ॐ' ('ओम्') शब्द का विशेष महत्त्व है। इसी शब्द से कुसुम कुमार अपने पत्रों का आरंभ करती है। उनके द्वारा लिखित नाटक 'ओम् क्रांति क्रांति' का शीर्षक भी 'ओम्' से प्रारंभ होता है। आपके द्वारा लिखित उपन्यास 'पूर्वी द्वार' में आध्यात्मिक और दार्शनिक विचारों का अनूठा संगम हुआ है। 'पूर्वी द्वार' उपन्यास में आपके आध्यात्मिक विचार दृष्टव्य है - " प्रेम के अनेकानेक रंग हैं किंतु सबसे पक्का 'ईश - प्रेम' का रंग। फीका नहीं पड़ता, न धोने से उतरता। यही रंग असली है। किंतु और रंग भी हैं। जिसको जो चाहिए, ओढ़ ले। सच्चे मन से ओढ़ ले। फिर मन न बदले। मन बदला तो अपने साथ धोखा होगा।"[11] वैदिक धर्म के प्रति प्रेम कुसुम कुमार के जीवन का एक घटक बना हुआ है। उनके जीवन की छोटी-छोटी बातों में उनका वैदिक धर्म के प्रति प्रेम दिखाई देता है।

1.2.2.6 शिक्षा - प्रेमी -

कुसुम कुमार शिक्षा-प्रेमी रचनाकार हैं। आप शिक्षा जैसे पवित्र क्षेत्रों में बढ़ते हुए अनाचार, भ्रष्टाचार, के प्रति सज़ग एवं सचेत हैं, इसलिए आपके द्वारा लिखित नाटक 'ओम् क्रांति क्रांति' शिक्षा व्यवस्था की समस्या पर आधारित है। प्रस्तुत नाटक में विद्यार्थियों का विद्रोह, महिला कालेज के भ्रष्ट लेक्चरर जो अपने कर्तव्य को भूलकर अनुशासनहीन कार्य कर रहे हैं। इनके विरोध में क्लासरूम क्रांति द्वारा लेखिका कुसुम कुमार परिवर्तन लाना चाहती है। आपका शिक्षा के प्रति अनन्य साधारण प्रेम 'ओम् क्रांति क्रांति' नाटक में स्पष्ट दिखाई देता है।

अतः यह कहना सही होगा कि कुसुम कुमार शिक्षा-प्रेमी हैं। लेखिका चाहती है कि शिक्षा जैसा क्षेत्र भ्रष्टाचार विहीन हो।

1.2.2.7 कला-प्रेमी -

आपकी कला का आविष्कार आपके नाटक, उपन्यास, कविता और चित्रकारी में हुआ है। आपके द्वारा लिखित उपन्यास 'पूर्वी द्वार' में कला के बारे में आपके विचार उल्लेखनीय है - " देखकर न देखना या फिर देखे हुए से पीठ फेरना तो रोगी, मरियल लोगों का कर्म हैं, देखना, प्रेरित होना, स्पर्श की इच्छा जागना मनुष्य होना है। देखना, देख-देख प्रसन्न होना, देखे की गूढ़तम व्याख्याएँ करना, 'कला' है।"[12] कला-प्रेमी आपके व्यक्तित्त्व का महत्त्वपूर्ण पहलू हैं। कुसुम कुमार के उपन्यासों के पात्र चित्रकला में अभिरुचि लेनेवाले हैं।

1.2.2.8 पक्षी - प्रेमी -

आपके द्वारा लिखित प्रसिद्ध नाटक 'सुनो शेफाली' में पक्षियों के स्वर का चित्रण स्थान - स्थान पर मिलता है। " पिंजरे में बंद पक्षी कुछ स्वर करता है। युवती मुंह ऊँचा करके पक्षी के स्वर को महसूस करती है।"[13] आपके उपन्यास 'पूर्वी द्वार' में 'पाखी रसैन' नाम से एक रहस्य का उद्घाटन किया है। जिसमें भारतीय पक्षियों का परिचय पाठकों से कराया है - " इसी अच्छे के स्पर्श को मन हो आया और निकाल बैठे 'पाखी रसैन'। पक्षियों के नामों पर उंडेल दिया इस क्षण का द्रवित मन- आम्री, सुहेला, सुबुगी, सुबुग, मोमबी, नीलकंठी, सूतकंठी, मोहरा, मोहरी, सुबैना, ब्राह्मी, सुदर्शना, दुपासी, तनवी, देवना, भव, भवी, प्रमिल, रक्सा, भावी, शिवि, जान्हवी, लोआ, लोई, पान, पान्या, रतरी, चिरी, चिरा, खुप्पी, विवो, अनूपा, युयुत्सना, जागोरी, शंखपुष्प, शंखपुष्पी।"[14] कुसुम कुमार ने राग-वन के पक्षी, उनके रूप, नाम, भेद, उपभेद आदि ब्योरों का विस्तार से वर्णन प्रस्तुत किया है। इससे उनका पक्षी प्रेम स्पष्ट होता है।

1.2.2.9 नारी मन की चतुर चितेरी -

नारी, नारी मन की गुत्थियों को अच्छी तरह पहचान लेती है। आपके साहित्य में नारी पात्र प्रमुखता से पाठकों के सामने उभरकर आते हैं, चाहे नाटक हो, उपन्यास या काव्य, हर विधा में आप हमेशा नारी मन की पक्षधर रही है। आपके साहित्य में नारी के मां, बेटी, बहन, पत्नी, प्रेमिका, बहू, भाभी, सास आदि विभिन्न रूपों का यथार्थ चित्रण किया हुआ दिखायी देता है। आपका नाट्य साहित्य नारी प्रधान है। आपके प्रसिद्ध नाटक 'ओम् क्रांति क्रांति', 'सुनो शेफाली' और 'दिल्ली ऊँचा सुनती है' में नारी जीवन को प्रमुखता से अधोरेखित किया हुआ नजर आता है।

अतः हम कह सकते हैं कि कुसुम कुमार नारी मन की गहराई को नापने के लिए हमेशा सचेत रही हैं।

1.2.2.10 पारंपरिक विचारवादी -

कुसुम कुमार का रहन-सहन सादगीयुक्त है। आपका व्यक्तित्व भारतीय पारंपरिक नारी जैसा लगता है। कुसुम कुमार के शब्दों में - "पारिवारिक परंपराओं की भी पूरी तरह पक्षधर हूं।"[15] आपके विचार का प्रभाव आपके साहित्य में भी दिखाई देता है। आपके नाटक, उपन्यास के पात्र भी

भारतीय परंपराओं में पले-पोसे हैं। कुसुम कुमार ने अपनी कलाकृतियों के पात्रों को अपनी विचारधारा के अनुकूल चित्रित किया है।

1.2.2.11 शाकाहारी -

कुसुम कुमार स्वयं शाकाहारी रही हैं। खान-पान के बारे में कुसुम कुमार ने पत्र में लिखा हैं - "निरामिष सादा भोजन। मांसाहारी हमारे परिवार में कोई नहीं।"[16] कुसुम कुमार अच्छे स्वास्थ्य के बारे में कहती हैं - "अच्छा स्वास्थ्य भी वहीं पहुंचा देता है मनुष्य को जहां राजयोग, दृष्टियोग, सुदर्शनयोग पहुंचाते हैं। अच्छा विश्वास भी वही ले आता है मनुष्य को जहां हरा या सुनहरा रंग ले आता है। जिस भोजन से चेहरे और आत्मा की चमक उड़ जाए वह कभी खाए ही क्यों मनुष्य ? हम जो खाते हैं उसी के भीतर बसे हैं हमारे मित्र, हमारे शत्रू, हमारे पुण्य, हमारे पाप। हम पहचाने हमें क्या खाना है, तब स्वास्थ्य से हमारी अच्छी मैत्री होगी। किसी जीव के प्राणों का हलवा, भूरता या कीमा खानेवाले बदले में सबसे मूल्यवान वस्तु 'स्वास्थ्य' चाहते हैं। विडंबना इससे विकट और क्या होगी ?"[17] कुसुम कुमार अच्छे स्वास्थ्य के लिए शाकाहारी की हिमायती है।

1.2.2.12 प्रयत्नशील -

कुसुम कुमार अपने जीवन में हमेशा प्रयत्नशील रही हैं। उन्होंने अपने जीवन के हर पड़ावों पर जीत हासिल की। शोधकार्य जैसे गंभीर विषय में भी उन्होंने सफलता पायी है। कुसुम कुमार हिंदी भाषी होते हुए भी उन्होंने मराठी भाषा सीखी है, यह उनके व्यक्तित्व की महत्त्वपूर्ण विशेषता है। जो प्रयत्नशीलता का अच्छा उदाहरण कहा जा सकता है।

1.3. कृतित्व -

कुसुम कुमार ने हर साहित्य की विधा में अपना अलग रंग दिखाया है, यकीन नहीं होता कि कुसुम कुमार ने इतने क्षेत्रों में इतना विशाल साहित्य सृजन किया है। इसलिए हम कुसुम कुमार को अनेक नामों से पुकार सकते हैं जैसे - कवयित्री कुसुम कुमार, नाटककार कुसुम कुमार, एकांकीकार कुसुम कुमार, उपन्यासकार कुसुम कुमार, चित्रकार कुसुम कुमार आदि। ऐसे बहुविध, बहुआयामी लेखिका के रूप में कुसुम कुमार का कृतित्व महनीय है।

1.3.1 साहित्य सृजनारंभ -

सन् 1975 ई.से लेकर आज तक उनकी लेखनी निरंतर चलती रही है। प्रथम कृति कवितासंग्रह है। जिसका शीर्षक है - "तृष्णांकित" '(सन् 1975) तदुपरान्त नाट्यलेखन का सिलसिला जारी रहा है।

1.3.2 कवि कर्म के प्रति सज़ग कवयित्री : कुसुम कुमार -

कुसुम कुमार मूलतः कवयित्री रही है। वे पहले कवि, बाद में नाटककार, उपन्यासकार हैं। उनका कवि रूप भी हिंदी पाठकों में काफी प्रिय रहा है। कुसुम कुमार के "तृष्णांकित" काव्यसंग्रह

के बारे में नीरजा टंडन लिखती हैं - " कवि कर्म के प्रति कवयित्री में सजगता है। सहज शब्दों द्वारा, अकृत्रिम शिल्प के माध्यम से, विविध अर्थ और संदर्भों का आभास देना इन कविताओं की प्रमुख विशेषता है। ये कविताएँ कवयित्री की एक आग, ऐसी तृष्णा, ऐसी कामना की अभिव्यक्ति है, जो कई रूप, रंग लिए हुए कवि हृदय की सुकोमल अनुभूतियों को प्रतिबिम्बित करती है।"[18] कवयित्री कुसुम कुमार के लिए कविता मात्र कविता ही नहीं हैं, बल्कि वैयक्तिक धरातल पर उनकी सहयोगिनी भी है।

1.3.3 प्रयोगधर्मी नाटककार कुसुम कुमार :-

हिंदी रंगमंच पर कुसुम कुमार प्रयोगधर्मिता की दृष्टि से शीर्षस्थ हैं। उनका प्रत्येक नाटक प्रयोग की दृष्टि से अनूठा है। डॉ.लवकुमार लवलीन प्रयोग के बारे में कहते हैं - " किसी भी साहित्यकार की प्रतिभा, उसकी सक्रिय कल्पनाशक्ति और उसके गहन चिंतन-मनन का समुचित परिचय हमें उसके द्वारा अपनी रचनाओं में किये गये प्रयोगों से ही मिलता है। मूलतः 'प्रयोग' शब्द का अर्थ होता है नयी वस्तू अथवा नये तथ्य अथवा नयी रचना प्रक्रिया के अन्वेषण की प्रक्रिया। नाटक के क्षेत्र में प्रयोग का महत्व और अधिक विशिष्ट हो जाता है, क्योंकि नाटक एक साथ श्रव्यकाव्य और दृश्यकाव्य है।"[19] कुसुम कुमार द्वारा लिखित 'ओम् क्रांति क्रांति' नाटक शिक्षा व्यवस्था पर आधारित है। कुसुम कुमार द्वारा लिखित नाटकों की शैली अलग है, जो अपने लक्ष्य को सीधे शब्दों में व्यक्त करती है। शिक्षा क्षेत्र में फैली बुराइयों को उसी की शैली में व्यक्त करने का अंदाज नाटककार की प्रयोगधर्मिता है। प्रस्तुत नाटक के पात्रों का चुनाव एक नयी दृष्टि से किया गया है क्योंकि इसमें सिर्फ एक कैंटीन बॉय को छोड़कर शेष सभी पात्र स्त्री पात्र ही हैं। स्त्री पात्रों की बहुलता रखना लेखिका कुसुम कुमार की प्रयोगधर्मिता है।

कुसुम कुमार का नाटक 'सुनो शेफाली' रंगमंचीय दृष्टि से एक प्रयोगधर्मी नाट्यरचना है। प्रस्तुत नाटक के प्रथम दृश्य में बायाँ और दायाँ दोनों तरफ मंच है। दूसरा, तीसरा, चौथा दृश्य दायी तरफवाले मंचपर खुलता है। पाँचवा दृश्य मंच के अग्रभाग में खुलता है। दृश्य विभाजन की यह तकनीक हिंदी नाटकों में सर्वथा नयी है, जो नाटककार की प्रयोगधर्मिता को स्पष्ट करती है।

कुसुम कुमार द्वारा लिखित नाटक 'दिल्ली ऊँचा सुनती है' शैली और शिल्प की दृष्टि से प्रयोगधर्मी है। इसमें छोटे - छोटे दृश्य अपने व्यंगात्मक संदर्भ से दर्शकों की संवेदना को जगाते हैं। छोटे-छोटे दृश्यों के माध्यम से व्यंग्यात्मक शैली में संवादों को रोचक बनाना लेखिका की प्रयोगधर्मिता है। डॉ.लवकुमार लवलीन कुसुम कुमार के बारे में कहते हैं कि - " कुसुम कुमार एक सक्रिय नाट्य लेखिका है। शैली, शिल्प और कथ्यगत प्रयोग इनके नाटकों को एक विशिष्ट गरिमा प्रदान करते हैं, साथ ही प्रयोग के स्तर पर पाठक-दर्शक को कुछ सोचने-समझने के लिए मजबूर भी करते हैं।"[20] कुसुम कुमार ने सन् 1975 से 1988 के बीच सात नाट्यकृतियों का सृजन किया है।

कुसुम कुमार के साहित्य की सूची संक्षेप में यहाँ दी जा रही हैं -

1.3.4 साहित्यिक कृतित्व -

1.3.4.1 काव्यसंग्रह -

1.तृष्णांकित
2. रास्तेभर जंगल
3. अभी रहेंगे
4. तीन अपराध
5. छत्र

1.3.4.2 नाटक साहित्य -

1. ओम् क्रांति क्रांति - 'नेशनल पब्लिशिंग हाऊस', नयी दिल्ली. प्रथम संस्करण 1978
2. सुनो शेफाली - 'पराग प्रकाशन', दिल्ली, प्रथम संस्करण 1979
3. दिल्ली ऊँचा सुनती है - 'सरस्वती विहार प्रकाशन', नयी दिल्ली, प्रथम संस्करण 1982
4. संस्कार को नमस्कार - 'सरस्वती विहार प्रकाशन', नयी दिल्ली, प्रथम संस्करण 1982
5. रावण लीला - 'सरस्वती विहार', जी.टी.रोड, शाहदरा दिल्ली, प्रथम संस्करण 1982
6. पवन चतुर्वेदी की डायरी - 'नेशनल पब्लिशिंग हाऊस', नयी दिल्ली, प्रथम संस्करण 1986
7. लश्कर चौक -

1.3.4.3 एकांकी साहित्य -

1.चूहे
2. सुखी जन
3. मित्र मंडली
4. निरमा
5. सलामी मंच
6. ख्वाबगाह
7. यादा मिट्‌टी
8. विधिवत् प्रजा
9. कोरस
10. रंगशाम

1.3.4.4 उपन्यास साहित्य -

1. ' हीरामन हाईस्कूल ' - ' नेशनल पब्लिशिंग हाऊस ', नयी दिल्ली, प्रथम संस्करण 1989
2. ' परदा बाड़ी '- ' किताब घर प्रकाशन ', नयी दिल्ली, प्रथम संस्करण 1992

3. ' पूर्वी द्वार ' - ' सामयिक प्रकाशन ', नयी दिल्ली, प्रथम संस्करण 2004

1.3.4.5 समीक्षा -

1. ' कस्तुरी मृग '
2. ' राजा मांगे पसीना '

1.3.4.6 अनुवाद -

1. ' संध्याछाया ' - अनूदित (जयवंत दळवी)
2. ' सूर्यास्त ' - अनूदित (जयवंत दळवी)
3. ' उसकी जात ' - अनूदित (विजय तेंडुलकर)
4. ' हिमालय की छाया ' - अनूदित (वसन्त कानेटकर)

1.3.4.7 विशिष्ट -

1. हिंदी नाट्य चिंतन - 'इंद्रप्रस्थ प्रकाशन', प्रथम संस्करण 1977।

उनकी कुछ रचनाओं के अनुवाद विभिन्न भारतीय भाषाओं में भी हो चुके हैं। ' सुनो शेफाली ' और ' ख्वाबगाह ' नाटकों पर टेलिफिल्में बनी है।

1.3.4.8 संप्रति -

' प्रश्नकाल ' शीर्षक से नाटक लिख रही हैं।

1.3.5 सम्मान एवं पुरस्कार -

1. साहित्यिक कृति पुरस्कार - सन् 1981 - 82
2. साहित्यिक कृति पुरस्कार - सन् 1988 - 89
3. साहित्यिक योगदान पुरस्कार - सन् 1998 - 99

अनेक अन्य ट्राफी, स्मृति चिन्ह वगैरह।

संपर्क -

डॉ.कुसुम कुमार
12/9, सर्वप्रिय विहार, नई दिल्ली - 110 016.

निष्कर्ष :

कुसुम कुमार साठोत्तरी हिंदी साहित्य की एक ऐसी रचनाकार है, जिन्होंने अपने साहित्य के द्‌वारा भारतीय मूल्यों के ऱ्हास को दर्शाया है। उनका समग्र साहित्य अपने जीवन के अनुभूतियों को प्रतिबिंबित करता है। कुसुम कुमार का जीवन मध्यमवर्गीय परिवार में बीता है। देश की राजधानी दिल्ली में जन्में कुसुम कुमार को सामाजिक, सांस्कृतिक, शैक्षिक दृष्टिकोण से किसी भी बात की कमी नहीं थी। माता-पिता धर्मपरायण, कर्मठ, परिश्रमी, शिक्षित और नीतीपरक पाठ पढ़ानेवाले होने के कारण कुसुम कुमार को अच्छे संस्कार, अच्छी शिक्षा घर से ही प्राप्त हुई है। पारिवारिक जीवन में उनके पति स्वदेश कुमार ने उनका महत्त्वपूर्ण साथ दिया है।

कुसुम कुमार मिलनसार और मद्‌दगार प्रकृति की है। बहुभाषज्ञ कुसुम कुमार को हिंदी, मराठी, अंग्रेजी आदि भाषाओं की जानकारी है। उन्होंने बुद्‌धि चातुर्य के आधार पर मराठी भाषा सीखकर मराठी रंगभूमि के अनेक श्रेष्ठ नाटकों का हिंदी में अनुवाद किया है।

कुसुम कुमार एक साहसी लेखिका है। उन्होंने अपने नाटकों के माध्यम से समाज में स्थित कुरीतियों, राजनेताओं तथा अधिकारियों के पाखंडी और स्वार्थनीति का निर्भिकता से पर्दाफाश किया है।

कुशाग्र बुद्‌धिमानी कुसुम कुमार का हिंदी नाट्य जगत् में अपना अलग रूतबा है। कुसुम कुमार दो बच्चों की मां है। उनकी ममता-मूर्ति मां का रूप सराहनीय है। कुसुम कुमार का वैदिक धर्म के प्रति अगाध प्रेम है।

कुसुम कुमार शिक्षा-प्रेमी रचनाकार हैं। कुसुम कुमार ने दो वर्ष तक अध्यापन का कार्य भी किया है। शिक्षा के प्रति अतीव प्रेम उनके द्‌वारा लिखित नाटक 'ओम् क्रांति क्रांति' में स्पष्ट झलकता हुआ दिखाई देता है।

बहुआयामी व्यक्तित्ववाली कुसुम कुमार कला-प्रेमी हैं। उनकी कला का आविष्कार नाटक, उपन्यास, कविता और चित्रकारी में हुआ है। कुसुम कुमार जन्मजात कलाकार हैं। उनके चुनिंदा चित्रों की प्रदर्शनी यह सिध्द कर देती है कि सचमुच कुसुम कुमार कला-प्रेमी हैं।

कुसुम कुमार नारी होने के नाते उनके साहित्य में नारी पात्र प्रमुखता से पाठकों के सामने उभरकर आते हैं। उन्होंने नारी के विभिन्न रूपों का यथार्थ चित्रण किया है। नारी मन की चतुर चितेरी कुसुम कुमार नारी मन की गुत्थियों को सुलझाने में सफल रही है।

कुसुम कुमार का रहन - सहन सादगीयुक्त है। उनका व्यक्तित्व पारंपारिक भारतीय नारी जैसा लगता है। कुसुम कुमार को निरामिष सादा भोजन पसंद है। कुसुम कुमार अच्छे स्वास्थ्य के लिए शाकाहारी की हिमायती है। कुसुम कुमार अपने जीवन में हमेंशा प्रयत्नशील रही है। उन्होंने प्रयत्नशीलता के आधार पर जीवन के हर पड़ावों पर जीत हासिल की है। मध्यमवर्गीय परिवार की दिल्ली जैसे महानगर में क्या हालत होती है, इसका यथार्थ चित्रण अपने साहित्य में कुसुम कुमार ने किया है। उनके द्‌वारा लिखित साहित्य में मध्यवर्गीय परिवार का दुःख, आर्थिक विवशता को

प्रमुखता से उजागर करता है। उन्होंने जो स्वयं देखा, भोगा, उसको अपने साहित्य में चित्रित किया है। कुसुम कुमार ने काव्य, नाटक, उपन्यास जैसी वैविध्यपूर्ण विधाओं में लेखन किया है। कुसुम कुमार के साहित्य में उनके व्यक्तित्व के पहलुओं का प्रतिबिंब नजर आता है। उनके साहित्य में व्यक्तित्व और कृतित्व की झलक दिखाई देती है। कुसुम कुमार प्रयोगधर्मी नाटककार के रूप में जानी जाती हैं। उनके सभी नाटक प्रयोगधर्मिता की दृष्टि से पूर्णतः सफल हुए हैं।

कहना सही होगा कि कुसुन कुमार का व्यक्तित्व एवं कृतित्व बहुआयामी है। एक सशक्त नाटककार, एकांकीकार, उपन्यासकार साथ ही साथ एक अच्छी चित्रकार भी हैं। उनकी यह पहचान पाठकों को प्रभावित किए बिना नहीं रहती।

संदर्भ सूची

अ.क्रं.	लेखक का नाम	पुस्तक का नाम	पृष्ठ क्रं.
1.	डॉ. सरोज मार्कण्डेय	निराला साहित्य में युगीन समस्याएँ	12
2.	कुसुम कुमार	द्वारा प्राप्त पत्र दि. 30/06/2006	----
3.	वही	वही	----
4.	वही	वही	-----
5.	वही	वही	----
6.	वही	'पूर्वी द्वार' प्लेप से उद्धृत	-----
7.	वही	'पूर्वी द्वार'	114
8.	वही	द्वारा प्राप्त पत्र दि. 30/06/2006	----
9.	सं.श्री.नवलजी	नालन्दा विशाल शब्द सागर	1309
10.	कुसुम कुमार	'पूर्वी द्वार'	232
11.	वही	वही	251
12.	वही	वही	121
13.	वही	'सुनो शेफाली '	9
14.	वही	'पूर्वी द्वार'	192
15.	वही	द्वारा प्राप्त पत्र दि. 30/06/2006	-----
16.	वही	वही	-----
17.	वही	'पूर्वी द्वार'	186
18.	नीरजा टंडन	समीक्षा (पत्रिका, सं.डॉ.गोपाल) अक्टुबर - दिसंबर, 1981	68
19.	डॉ.लवकुमार लवलीन	' साठोत्तर हिंदी नाटककार'	146
20.	वही	वही	वही